Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 20, Issue No. 4, October-2023, ISSN 2230-7540

DOI: https://doi.org/10.29070/c5cep810

Check for updates

भारतीय राजनीति में राजनैतिक दलों के समक्ष चुनौतीयां

शैलेन्द्र पाण्डेय [1] * , **डॉ. मंजू सोलंकी** [2]

1. रिसर्च स्कॉलर, श्री वेंकटेशवरा विश्वविद्यालय, गजरौला, उत्तरप्रदेश, भारत
shailendrapandey32@gmail.com ,
2. एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, श्री वेंकटेशवरा विश्वविद्यालय, गजरौला, उत्तरप्रदेश, भारत

सारांश: भारतीय राजनीति में राजनैतिक दलों को वर्तमान समय में अनेक जटिल और बहुआयामी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। ये चुनौतियाँ लोकतांत्रिक संस्थाओं की विश्वसनीयता को प्रभावित करती हैं, चुनावी प्रक्रिया, आंतरिक लोकतंत्र, विचारधारात्मक स्पष्टता, वित्तीय पारदर्शिता, और क्षेत्रीय संतुलन जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं को भी प्रभावित करती हैं। दलों के बीच बढ़ती व्यक्तिवादिता, विचारधारा की अस्पष्टता, और गठबंधन राजनीति की अनिश्चितता भी लोकतांत्रिक प्रणाली को जटिल बनाती है। साथ ही, मतदाताओं की बढ़ती अपेक्षाएं, सामाजिक मीडिया का प्रभाव, और जातीय व धार्मिक ध्रुवीकरण ने राजनैतिक दलों के समक्ष नई रणनीतियाँ विकसित करने की आवश्यकता उत्पन्न की है। इन चुनौतियों का प्रभावी समाधान भारतीय लोकतंत्र की मजबूती और पारदर्शिता सुनिश्चित करने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

मुख्य शब्द: राजनैतिक दल, लोकतंत्र, चुनावी प्रक्रिया, आंतरिक लोकतंत्र, विचारधारा, वित्तीय पारदर्शिता, गठबंधन राजनीति, जातीय

X

परिचय

भारतीय राजनीति में राजनैतिक दलों के समक्ष अनेक जटिल और बहुआयामी चुनौतियाँ उभरकर सामने आ रही हैं, जो उनके आंतरिक संगठनात्मक ढांचे को प्रभावित कर रही हैं, लोकतांत्रिक प्रणाली की सुदृढ़ता पर भी प्रश्नचिह्न खड़े कर रही हैं। सबसे प्रमुख चुनौती दलों में आंतरिक लोकतंत्र की कमी है, जहाँ निर्णय प्रक्रिया प्रायः कुछ व्यक्तियों तक सीमित रहती है, जिससे आम कार्यकर्ताओं और जनसमर्थकों की भागीदारी सीमित हो जाती है। इसके अतिरिक्त, विचारधारात्मक स्पष्टता का अभाव और अवसरवादी गठबंधन राजनीति ने जनता के बीच दलों की विश्वसनीयता को प्रभावित किया है। चुनावों में धनबल और बाहुबल का प्रयोग, साथ ही चुनावी खर्च में पारदर्शिता की कमी, दलों की नैतिकता पर सवाल खड़े करते हैं। बदलते सामाजिक और तकनीकी परिदृश्य, विशेष रूप से सोशल मीडिया और डिजिटल प्रचार माध्यमों की भूमिका, नई रणनीतियाँ अपनाने की आवश्यकता को दर्शाते हैं। जातिवाद, संप्रदायवाद, और क्षेत्रीय असंतुलन जैसी सामाजिक चुनौतियाँ भी दलों की नीतिगत दिशा को प्रभावित करती हैं। इन सबके बीच मतदाताओं की बढ़ती जागरूकता और अपेक्षाएं, राजनैतिक दलों को अधिक उत्तरदायी, पारदर्शी और विचारशील बनने की दिशा में प्रेरित कर रही हैं।

राजनीतिक दल का परिचय

भारतीय राजनीतिक जलवायु में कई अलग-अलग राजनीतिक दल शामिल हैं जो एक विशेष सरकार का चयन करने के लिए हमारे देश में सभी चुनाव लड़ते हैं।क्योंकि हमारे पास ये राजनीतिक दल हैं और जिन्हें हम पसंद करते हैं उन्हें वोट देने का अधिकार है, हमारे देश में लोकतंत्र मजबूत और स्थिर रहा है। इसलिए, यह बिना किसी संदेह के कहा जा सकता है कि "राजनीतिक दलों का होना किसी भी राष्ट्र के लिए एक उचित और स्वस्थ स्थिति है। एक राजनीतिक दल लोगों के एक विशिष्ट समूह से बना होता है जो एक सरकार चलाने के लिए एक-दूसरे के खिलाफ प्रतिस्पर्धा करने के लिए एक साथ आते हैं जो देश की बेहतरी की जरूरतों का ध्यान रखने में सक्षम होगा। राजनीतिक दल मूल रूप से यह सुनिश्चित करने के लिए बनाए जाते हैं कि देश में नेतृत्व करने के लिए लोगों का एक समूह हो।"15 यह उल्लेख नहीं करना चाहिए कि यह देश के लोगों को सरकार के बारे में एक प्रभावी और अधिक विकसित निर्णय लेने के लिए एक विशेष विकल्प प्रदान करता है जो उनके पास है।इसके अलावा, चुनाव जीतने की आकांक्षा अन्य राजनीतिक दलों को भी अच्छा प्रदर्शन करने और अपने प्रतिद्वंद्वियों की तुलना में अधिक वोट इकट्ठा करने के लिए प्रेरित करती है। अतः यह कहा जा सकता है कि देश की बेहतरी के लिए राजनीतिक दलों के कार्य निश्चित रूप से बहुत महत्वपूर्ण हैं।

राजनीतिक दलों के प्रकार

राजनीतिक दलों के विभिन्न प्रकार होते हैं जो समाज में अलग-अलग विचारधाराओं और उद्देश्यों को प्रतिनिधित्व करते हैं। इन दलों का अपना विशेष धार्मिक, सामाजिक, और आर्थिक सिद्धांत होता है जिसके आधार पर वे राजनीतिक प्रक्रिया में शामिल होते हैं। यहां हिंदी में कुछ प्रमुख राजनीतिक दलों के प्रकारों की चर्चा की जा रही है:

1. **राष्ट्रीय दल:** राष्ट्रीय दल वह होते हैं जो अखिल भारतीय स्तर पर कार्यरत होते हैं और जिन्हें चुनाव आयोग ने राष्ट्रीय दल के रूप में मान्यता प्रदान की है। इनमें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, भारतीय जनता पार्टी, बहुजन समाज पार्टी आदि शामिल हैं।

2. **राज्यवार दल:** ये वे दल हैं जो केवल किसी एक राज्य में ही कार्यरत होते हैं और जिन्हें चुनाव आयोग ने राज्यवार दल के रूप में मान्यता प्रदान की है। उदाहरण के लिए, जम्मू और कश्मीर में जम्मू ओर कश्मीर राष्ट्रीय पार्टी और बिहार में राष्ट्रीय जनता दल इस श्रेणी में आते हैं।

3. **अद्भुत राज्यवार दल:** इन दलों को चुनाव आयोग ने किसी विशेष राज्यवार दल के रूप में मान्यता नहीं प्रदान की है, लेकिन ये किसी एक राज्य में कार्यरत होते हैं।

4. **रजिस्टर्ड (साधारित) दल:** इन दलों को चुनाव आयोग ने राजनीतिक पार्टी के रूप में पहचाना है, लेकिन ये केवल किसी एक राज्य में कार्यरत होते हैं और उन्हें अद्भुत राज्यवार दल के रूप में चुनौती देना पड़ता है।

5. **रजिस्टर्ड (उप) दल:** इन दलों को चुनाव आयोग ने राजनीतिक पार्टी के रूप में पहचाना है, लेकिन इन्हें राज्यवार दल या अद्भुत राज्यवार दल के रूप में चुनौती देना पड़ता है।

इन प्रमुख प्रकारों के अलावा भी कई सारे छोटे और स्थानीय दल होते हैं जो किसी विशेष क्षेत्र या समुदाय की आवश्यकताओं को प्रतिनिधित्व करते हैं। राजनीतिक दलों के इन विभिन्न प्रकार ने भारतीय राजनीति को विविधता और गहराई दी है, जिससे लोगों को विभिन्न दृष्टिकोण से संबोधित करने का सामर्थ्य मिलता है।

उद्देश्य

1. राष्ट्रीय स्तर पर गठबंधन सरकारों के निर्माण में क्षेत्रीय और राज्यीय दलों की भूमिका का अध्ययन करना।

2. राष्ट्रीय राजनीति में क्षेत्रीय और राज्य दलों की घटती भूमिका और विशेष रूप से 2014 के आम चुनावों के बाद भारतीय राजनीति पर इसके विभिन्न प्रभावों को समझने का अध्ययन करना।

शोध कार्यप्रणाली

अनुसंधान पद्धति अनुसंधान समस्या को व्यवस्थित रूप से हल करने का एक तरीका है। प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य भारतीय राजनीति में राजनैतिक पार्टियों की भूमिका से संबंधित है। इस पद्धति का उपयोग राष्ट्रीय राजनीति में और उनके संबंधित राज्यों में भी क्षेत्रीय/राज्य राजनीतिक दलों की उत्पत्ति और विकास का पता लगाने के लिए किया जाएगा। विभिन्न राज्यों में क्षेत्रीय और राज्य-आधारित राजनीतिक दलों के प्रक्षेपवक्र का अध्ययन करने के लिए एक तुलनात्मक पद्धति का भी उपयोग किया जाएगा।

अनुसंधान समस्या का विवरण: वर्ष 1989 को राष्ट्रीय राजनीति में क्षेत्रीय और राज्य दलों की भूमिका का अध्ययन करने के लिए चुना गया है, क्योंकि यह एक ऐसे वर्ष के रूप में चिन्हित किया गया है, जब से राष्ट्रव्यापी राजनीति में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की भूमिका में काफी वृद्धि हुई है, जिसके कारण भारतीय राजनीति में कई बदलाव हुए हैं। संघीय सिस्टम। अंत में, बदलते दलीय तंत्र के संदर्भ में क्षेत्रीय दलों की गतिशीलता को समझने का भी प्रयास किया जाएगा, जो 2014 के आम चुनावों के बाद होने पर विचार किया जा रहा है।

अनुसंधान प्रकार: विश्लेषण का उद्देश्य अध्ययन में डेटा के सार को परिभाषित करना होगा। डेटा की प्रकृति को देखते हुए, वर्तमान में चल रहे कार्य में गुणात्मक सह मात्रात्मक पहलू होंगे, लेकिन मुख्य रूप से पहलू में मात्रात्मकता होगी, क्योंकि इस विश्लेषण के अधिकांश निष्कर्ष मात्रात्मक उपायों पर केंद्रित होंगे। शोधकर्ता द्वारा शोध समस्या के परिणामों पर अध्ययन किया जायेगा, जिसमें गुणात्मक विश्लेषण को भी परिभाषित किया जायेगा।

नमूना डिजाइन: शोध कार्य के कुछ मामलों में, पूरे शोध का विश्लेषण करना लगभग असंभव होगा; इसलिए शोध नमूने का उपयोग करना ही एकमात्र विकल्प होगा। वर्तमान शोध का एक ही उद्देश्य होगा, शोध कार्य के विश्लेषण का नमूना तय करने की प्रक्रिया, प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य भारतीय राजनीति में राजनैतिक पार्टियों की भूमिका से संबंधित होगा।

डेटा संग्रह रणनीति (प्राथमिक और माध्यमिक विधियाँ): अध्ययन के आंकड़े, तथ्य और आंकड़े प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों दोनों पर आधारित होंगे। सामग्री के प्राथमिक स्रोतों में ईसीआई (भारत के चुनाव आयोग), लोकसभा की बहस, सीएसडीएस (विकासशील समाजों के अध्ययन के लिए केंद्र) डेटा यूनिट से प्राप्त डेटा और क्षेत्रीय राजनीतिक दल के नेताओं की प्रतिक्रियाएं शामिल हैं। प्रश्नावली पर। द्वितीयक स्रोतों के रूप में पुस्तकों, प्रकाशित शोध पत्रों, समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के लेखों का उपयोग किया जाता है।

डेटा विश्लेषण

यह खंड भारतीय दल प्रणाली की विशिष्ट विशेषताओं का विश्लेषण करता है। निम्नलिखित तालिका विभिन्न चरणों के पार्टी सिस्टम का वर्णन करती है:

पार्टी प्रणाली के विभिन्न चरणों का विश्लेषण

यह खंड भारतीय दल प्रणाली की विशिष्ट विशेषताओं का विश्लेषण करता है। भारतीय दल प्रणाली का विकास चार प्रमुख चरणों में विभाजित किया जा सकता है। प्रथम चरण (1952-1967) में कांग्रेस का प्रभुत्व था, जहां पार्टी ने राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रभाव से अपनी स्थिति मजबूत की। इस चरण में कांग्रेस पार्टी ने पहले चार संसदीय चुनावों में विजय प्राप्त की और एकमात्र प्रमुख पार्टी के रूप में उभरी।

द्वितीय चरण (1967-1989) में कांग्रेस प्रणाली का पतन देखा गया और प्रतिस्पर्धी राजनीति का उदय हुआ। इस अवधि में कांग्रेस का वर्चस्व टूटने लगा और अन्य दलों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। 1967 के चुनावों ने राज्य स्तर पर विभिन्न पार्टियों की उभरती भूमिका को प्रदर्शित किया, जिससे प्रतिस्पर्धी राजनीति की नींव रखी गई।

तृतीय चरण (1989-2014) में क्षेत्रीय दलों का उदय हुआ और गठबंधन राजनीति का दौर शुरू हुआ। इस अवधि में राष्ट्रीय स्तर पर गठबंधन सरकारों का गठन हुआ, जिसमें क्षेत्रीय दलों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1989 के बाद के चुनावों में गठबंधन सरकारों का गठन और क्षेत्रीय दलों की प्रभावशाली उपस्थिति देखी गई।

चतुर्थ चरण (2014-वर्तमान) में राष्ट्रीय दलों का पुनरुत्थान हुआ और क्षेत्रीय दलों की भूमिका में कमी आई। 2014 के आम चुनावों के बाद भाजपा का प्रभुत्व बढ़ा और राष्ट्रीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका सीमित हो गई। इस बदलाव ने भारतीय दल प्रणाली में नए परिवर्तनों को जन्म दिया।

तालिका 1: भारतीय दल प्रणाली के विभिन्न चरण

चरण	कालावधि	प्रमुख विशेषताएँ
प्रथम चरण	1952-1967	कांग्रेस का प्रभुत्व, राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के नेतृत्व का प्रभाव
द्वितीय चरण	1967-1989	कांग्रेस प्रणाली का पतन, प्रतिस्पर्धी राजनीति का उदय
तृतीय चरण	1989-2014	क्षेत्रीय दलों का उदय, गठबंधन राजनीति का दौर
चतुर्थ चरण	2014-वर्तमान	राष्ट्रीय दलों का पुनरुत्थान, क्षेत्रीय दलों की भूमिका में कमी

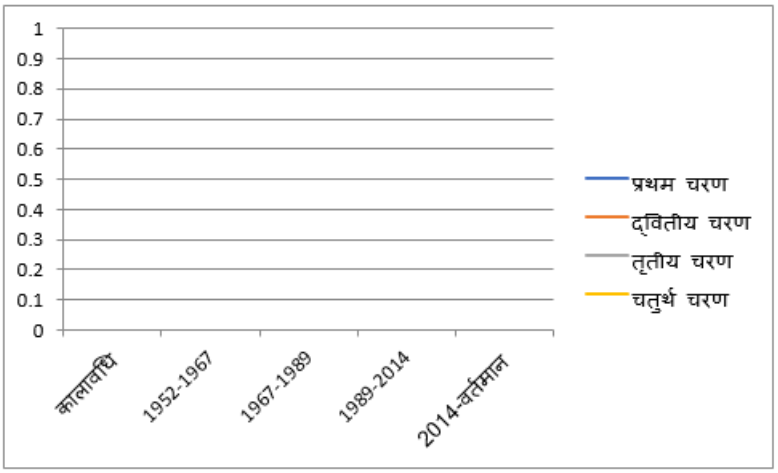

चित्र 1: विभिन्न चरणों में भारतीय दल प्रणाली का विकास

क्षेत्रीय और राज्य आधारित पार्टियों की उत्पत्ति और विकास

विभिन्न सिद्धांतों के ढांचे में क्षेत्रीय और राज्य आधारित पार्टियों की उत्पत्ति और विकास का अध्ययन निम्नलिखित तालिका में संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है: इस अनुभाग में, क्षेत्रीय और राज्य आधारित पार्टियों की उत्पत्ति और विकास का विश्लेषण किया जाएगा।

क्षेत्रीय दलों का उदय और विकास

विभिन्न सिद्धांतों के ढांचे में क्षेत्रीय और राज्य आधारित पार्टियों की उत्पत्ति और विकास का अध्ययन महत्वपूर्ण है। क्षेत्रीय दलों की उत्पत्ति और विकास के विभिन्न कारण रहे हैं, जैसे भाषा, सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक न्याय, और स्थानीय मुद्दे। उदाहरण के लिए, तमिलनाडु में डीएमके (द्रविड़ मुनेत्र कड़गम) का गठन 1949 में हुआ, जो भाषा और सांस्कृतिक पहचान पर आधारित था। इसी तरह, महाराष्ट्र में शिवसेना की स्थापना 1966 में मराठी अस्मिता और स्थानीय मुद्दों को ध्यान में रखकर की गई।

पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) का गठन 1998 में कांग्रेस पार्टी से विभाजन के बाद हुआ, जो राज्य के मुद्दों पर केंद्रित था। उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी (सपा) और बहुजन समाज पार्टी (बसपा) का गठन क्रमशः 1992 और 1984 में हुआ, जो जातीय और सामाजिक न्याय के मुद्दों पर आधारित था। ये दल विभिन्न राज्यों में अपने-अपने मुद्दों के आधार पर उभरे और राज्य की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

तालिका 2: प्रमुख क्षेत्रीय दलों की स्थापना और विकास

राज्य	प्रमुख क्षेत्रीय दल	स्थापना का वर्ष	उत्पत्ति का कारण
तमिलनाडु	डीएमके	1949	भाषा और सांस्कृतिक पहचान
महाराष्ट्र	शिवसेना	1966	मराठी अस्मिता और स्थानीय मुद्दे
पश्चिम बंगाल	टीएमसी	1998	कांग्रेस से विभाजन, राज्य के मुद्दे
उत्तर प्रदेश	सपा, बसपा	1992, 1984	जातीय और सामाजिक न्याय के मुद्दे

तालिका 3: प्रमुख भारतीय क्षेत्रीय राजनीतिक दलों का संक्षिप्त विवरण

दल का नाम	स्थापना वर्ष	प्रमुख नेता	महत्वपूर्ण घटनाएँ और उपलब्धियाँ
तेलुगु देशम पार्टी	1982	एन. टी. रामाराव	आंध्र प्रदेश में सत्ता में आना, राष्ट्रीय राजनीति में भूमिका
द्रविड़ मुनेत्र कड़गम	1949	सी. एन. अन्नादुरई	तमिलनाडु में प्रमुख पार्टी, सामाजिक न्याय आंदोलन में योगदान

समाजवादी पार्टी	1992	मुलायम सिंह यादव	उत्तर प्रदेश में प्रमुख पार्टी, राष्ट्रीय राजनीति में भूमिका

चुनौतियां और गतिविधियाँ

· **विभाजन:** बहुदलीय प्रणाली राजनीतिक विभाजन का कारण बन सकती है, जिससे स्थिर और समर्थनशील सरकारें बनाना कठिन हो सकता है।

· **पहचान राजनीति:** दल अक्सर पहचान आधारित मुद्दों, जैसे धर्म, जाति, और भाषा, का उपयोग करते हैं, जिससे राजनीतिक दृश्य की जटिलता बढ़ सकती है।

· **चुनावी राजनीति:** प्रतिस्पर्धी चुनावी राजनीति दलों को विभिन्न रणनीतियों का सामना करने, गठबंधन बनाने, और वोटर पसंदों के आधार पर अपनी नीतियों को समायोजित करने के लिए मजबूर करती है।

· **गठबंधन गतिविधियाँ:** गठबंधन सरकारों में विभिन्न दलों को मिलकर काम करना होता है, जिससे एक गतिशील और कभी-कभी अस्थिर राजनीतिक वातावरण बनता है।

संक्षेप में, भारत में दलों की प्रणाली एक संविदानिक लोकतंत्र के रूप में विभिन्न राष्ट्रीय और क्षेत्रीय बलों के संगम को प्रतिदर्शित करती है। इसमें विभिन्न चुनौतियां और संग्राम हैं, लेकिन यह सिखाती है कि राजनीतिक प्रक्रिया में सुधार का काम कितना महत्वपूर्ण है।

राजनीतिक दलों की उत्पत्ति और विकास

राजनीतिक दलों की उत्पत्ति और विकास में विभिन्न प्रकार के कारकों का संयोजन होता है। यहां आपको दो प्रमुख श्रेणियों में राजनीतिक दलों की उत्पत्ति और विकास के तरीके मिलेंगे:

1. संसदीय और चुनावी मूल

· **चुनौती का सामना:** अधिकांश देशों में राजनीतिक दलों की उत्पत्ति चुनौती के सामने होती है, जिसमें विधायिका और चुनावी समितियों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। ये समूह पहले स्थानीय स्तर पर शुरू होते हैं और धीरे-धीरे चुनावी समितियों में विकसित होते हैं।

· **राजनीतिक सिद्धांतों का प्रभाव**: राजनीतिक दलों की उत्पत्ति में राजनीतिक सिद्धांतों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इन सिद्धांतों के आधार पर उनका गठन होता है और वे चुनावों में भाग लेने के लिए स्थापित होते हैं।

2. अतिरिक्त संसदीय मूल

· **बाहरी संगठनों का प्रभाव:** कई बार राजनीतिक दलें उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में बनाए गए बाहरी संगठनों के प्रभाव के कारण उत्पन्न होती हैं। ये संगठन विभिन्न क्षेत्रों से लोगों को जोड़कर एक सामूहिक धाराओं को प्रमोट करते हैं, जो बाद में राजनीतिक दल बन सकते हैं।

· **किसानों और श्रमिक संघों का योगदान:** कृषि सहकारी समितियों, ट्रेड यूनियन, और श्रमिक संघों का प्रभाव भी राजनीतिक दलों की उत्पत्ति में महत्वपूर्ण होता है। इन संघों के माध्यम से लोग अपने हितों की रक्षा करने के लिए एकजुट होते हैं और राजनीतिक दल बनाने में सक्रिय भूमिका निभाते हैं।

इसके अलावा, राजनीतिक दलों का विकास देश के सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक संदर्भ के साथ जुड़ा होता है और यह देखने को मिलता है कि राजनीतिक दलें कैसे जनमत की मांगों को पूरा करने का प्रयास करती हैं और कैसे समाज में परिवर्तन लाने का प्रयास करती हैं।

निष्कर्ष

भारतीय राजनीति में राजनैतिक दल जिन बहुआयामी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, वे केवल चुनावी सफलता तक सीमित न होकर, लोकतंत्र की स्थायित्व, उत्तरदायित्व एवं नैतिकता से भी गहराई से जुड़ी हुई हैं। विचारधारात्मक अपरिभाषितता, आंतरिक लोकतंत्र का अभाव, वित्तीय अपारदर्शिता, और सामाजिक-धार्मिक विभाजन की राजनीति ने दलों की जनविश्वास अर्जित करने की क्षमता को क्षीण किया है। इसके अतिरिक्त, बदलते वैश्विक राजनीतिक परिदृश्य, तकनीकी नवाचार तथा डिजिटल माध्यमों की तीव्रता ने पारंपरिक राजनीतिक रणनीतियों को अप्रासंगिक बना दिया है, जिससे राजनैतिक दलों को नवाचार और पुनर्संरचना की दिशा में अनिवार्य रूप से अग्रसर होना पड़ रहा है। इन सभी चुनौतियों का समाधान

केवल सैद्धांतिक प्रतिबद्धता और संगठनात्मक सुधारों के माध्यम से ही संभव है। यदि राजनैतिक दल आत्मावलोकन कर पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और समावेशिता की दिशा में ठोस कदम उठाते हैं, तो वे लोकतांत्रिक मूल्यों की पुनर्स्थापना कर सकेंगे, भविष्य की राजनीति को भी अधिक सुचिन्तित, संवेदनशील और जनोन्मुख बना पाएंगे।

संदर्भ

1. आंडर्सन, वॉल्टर के.। "भारत के 1991 के चुनाव: अनिश्चित निर्णय," एशियन सर्वे, 31, नं. 10 (1991): 976-989।
2. बाजपेई, के. शंकर। "भारत में 1991: नई शुरुआतें," एशियन सर्वे, 32, नं. 2 (फरवरी 1992): 207-216।
3. बेग, मिर्जा असमर, पांडे, शशिकांत, और खरे, सुधीर। "महागठबंधन की विफलता," इकनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली 54, नं. 31 (3 अगस्त 2019)।
4. भटनागर, वाई. सी. और शकीर, मोइन। "सातवीं लोक सभा के चुनाव," द इंडियन जर्नल ऑफ पोलिटिकल साइंस, 41, नं. 1 (मार्च 1980): 69-78।
5. भट्टाचार्य, द्वैपायन। "पश्चिम बंगाल: स्थायी सत्ताधारी और राजनीतिक स्थिरता," इकनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 39, नं. 51 (2004): 5477-5483।
6. बोस, प्रसंजित। "निर्णय 2009: वामपंथियों की आलोचनाओं का मूल्यांकन," इकनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 44, नं. 40 (2009): 32-38।
7. ब्रांसी, डैन। "क्षेत्रीय पार्टियों की उत्पत्ति और ताकत," ब्रिटिश जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस 38, नं. 1 (2008): 135-159।
8. बुवा,लोक सभा चुनावों में राज्य स्तर की पार्टियों का प्रदर्शन," द इंडियन जर्नल ऑफ पोलिटिकल साइंस, 72, नं. 4 (अक्टूबर - दिसंबर 2011): 937-942।
9. गांगुली, सुमित। "भारत में 1996: एक उथल-पुथल का वर्ष," एशियन सर्वे, 37, नं. 2 (1997): 126-135।
10. गांगुली, सुमित। "भारत में 1997: एक और उथल-पुथल का वर्ष," एशियन सर्वे, 38, नं. 2 (फरवरी 1998): 126-134।
11. गोल्ड, हारोल्ड ए.। "भारत में आठवें सामान्य चुनाव पर एक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य," एशियन सर्वे 26, नं. 6 (1986): 630-652।
12. हज़री, सुभास चंद्र। "क्षेत्रवाद की राजनीति: भारत में राजनीतिक विकास पर प्रभाव," द इंडियन जर्नल ऑफ पोलिटिकल साइंस 52, नं. 4 (1991): 208-224।
13. इज़राइल, मिल्टन। "भारतीय पार्टी प्रणाली और 1971 के संसदीय चुनाव," इंटरनेशनल जर्नल, 27, नं. 3 (गर्मियों 1972): 437-447।
14. जैफरेलोट, क्रिस्टोफ और वर्नियर्स, गिल्स। "उत्तर प्रदेश में जातियाँ, समुदाय और पार्टियाँ," इकनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली 47, नं. 32 (2012): 89-93।
15. जोढ़का, सुरिंदर एस.। "क्षेत्र की वापसी: पंजाब में पहचान और चुनावी राजनीति," इकनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली 40, नं. 3 (2005): 224-230।
16. कैलाश, के. के.। "16वीं लोक सभा चुनावों में क्षेत्रीय पार्टियाँ: कौन जीवित रहा और क्यों?" इकनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली 49, नं. 39 (27 सितंबर 2014): 64-71।
17. कैलाश, के. के.। "गठबंधन और चुनाव 2009 के पाठ," इकनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली 44, नं. 39 (2009): 52-57।